देव-शास्त्र-गुरु पूजा भाषा

(प्रथम देव)

पंच परमेष्ठी के मुलगुण, देव, शास्त्र और गुरु अर्थात अरहंत देव उनके द्वारा प्राणियो के हितार्थ कहे गये शास्त्र तथा मोक्ष-साधना में तत्पर दिगम्बर साधु को नमस्कार कर पूजा करें।

अडिल्ल छन्द

३/९
पीले चावल/लौंग
क्षेपण करना

प्रथम देव अरहन्त सुश्रुत सिद्धान्त जू।
गुरु निर्ग्रन्थ महन्त मुक्तिपुर पंथ जू॥
तीन रतन जग माहिं सो ये भवि ध्याइये।
तिनकी भक्ति प्रसाद परमपद पाइये॥

दोहा - पूजों पद अरहन्त के, पुजों गुरुपद सार,
पूजों देवी सरस्वती, नितप्रति अष्ट प्रकार।

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुसमूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुसमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुसमूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

गीता छन्द

सुरपति उरगनरनाथ तिनकर, बंदनीक सुपद-प्रभा।
अति शोभनीक सुवरण उज्जवल, देखि छविमोहित सभा॥
वर नीर क्षीर समुद्र घट भरि अग्र तसु बहुविधि नचूं।
अरहंत श्रुत-सिद्धांत गुरु-निरग्रन्थ नित पूजा रचूं॥

झारी से जल

दोहा - मलिन वस्तु हरलेत सब, जल स्वभाव मलछीन।
जासों पूजौं परमपद, देव शास्त्र गुरु तीन॥

ॐ ह्रीं देव-शास्त्र-गुरुभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा॥१॥

चन्दन जल

जे त्रिजग उदर मँझार प्राणी तपत अति दुद्धर खरे।
तिन अहितहरन सुवचन जिनके, परम शीतलता भरे॥
तसु भ्रमर-लोभित घ्राण पावन सरस चंदन घिसि सचूं।
अरहंत श्रुत-सिद्धान्त गुरु-निरग्रन्थ नित पूजा रचूं॥
दोहा - चन्दन शीतलता करै, तपत वस्तु परवीन।
जासौं पूजौं परमपद, देव शास्त्र गुरु तीन॥

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यों संसार-ताप-विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ॥२॥

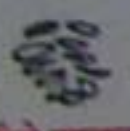
सफेद चावल

यह भवसमुद्र अपार तारण, के निमित्त सुविधि ठई।
अति दृढ़ परमपावन जथारथ भक्ति वर नौका सही॥
उज्जावल अखंडित सालि तंदुल पुंज धरि त्रयगुण जचूँ।
अरहंत श्रुत-सिद्धांत गुरु-निरग्रन्थ नित पूजा रचूँ॥
दोहा - तंदुल सालि सुगन्ध अति, परम अखंडित बीन।
जासों पूजौं परमपद, देव शास्त्र गुरु तीन॥

ॐ ह्रीं देव-शास्त्र-गुरुभ्योऽक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा॥३॥

पीले चावल

जे विनयवत सुभव्य-उर-अम्बुजप्रकाशन भान हैं।
जे एक मुख चारित्र भाषित त्रिजगमाहिं प्रधान हैं॥
लहि कुंद कमलादिक पहुप, भव भव कुवेदनसों बचूं।
अरहंत श्रुत-सिद्धान्त गुरु -निरग्रन्थ नित पूजा रचूं॥
दोहा - विविध भाँति परिमल सुमन, भ्रमर जास आधीन।
जासों पूजौं परमपद, देव शास्त्र गुरु तीन॥

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्य: कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा॥४॥

सफेद मिठाई

अति सबल मद-कंदर्प जाको क्षुधा-उरग अमान हैं।
दुस्सह भयानक तासु नाशन को सुगरुड़ समान है॥
उत्तम छहों रसयुक्त नित, नैवेद्य करि घृत में पचूं।
अरहन्त श्रुत-सिद्धांत गुरु- निरग्रन्थ नित पूजा रचूं॥
दोहा - नानाविधि संयुक्तरस, व्यजंन सरस नवीन।
जासों पूजौं परमपद, देवशास्त्र गुरु तीन॥

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरूभ्य: क्षुधा-रोग-विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा॥५॥

पीली खिटकी

जे त्रिजगउद्यम नाश कीने, मोह तिमिर महाबली।
तिहि कर्मघाती ज्ञानदीपप्रकाश जोति प्रभावली॥
इह भाँति दीप प्रजाल कंचन में सुभाजन में खचूं।
अरहंत श्रुतसिद्धांत गुरु-निरग्रन्थ नित पूजा रचूं॥
दोहा - स्वपर प्रकाशक जोति अति, दीपक तमकर हीन।
जासों पूजौं परमपद, देव शास्त्र गुरु तीन॥

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यो मोहन्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥६॥

धूप

जो कर्म-ईंधन दहन अग्निसमूह सम उद्धत लसै।
वर धूप तासु सुगन्धता करि, सकल परिमलता हँसै॥
इह भाँति धूप चढ़ाय नित भव ज्वलनमाहिं नहीं पचूं।
अरहंत श्रुतसिद्धांत गुरु-निरग्रन्थ नित पूजा रचूँ॥
दोहा - अग्निमाँहि परिमल दहन, चंदनादि गुणलीन।
जासों पूजौं परमपद, देव शास्त्र गुरु तीन॥

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यो अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥७॥

फल

लोचन सुरसना घ्रान उर, उत्साह के करतार हैं।
मोपै न उपमा जाय वरणी, सकल फल गुणसार हैं॥
सो फल चढ़ावत अर्थपूरन, परम अमृतरस सचूं।
अरहंत श्रुतसिद्धान्त गुरु-निरग्रन्थ नित पूजा रचूं॥
दोहा - जे प्रधान फल फलविषै, पंचकरण-रस लीन।
जासों पूजौं परमपद, देव शास्त्र गुरु तीन॥

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यों मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥८॥

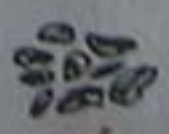
अर्घ

जल परम उज्जवल गंध अक्षत, पुष्प चरु दीपक धरूँ।
वर धूप निरमल फल विविध, बहु जनम के पातक हरूँ॥
इह भाँति अर्घ चढ़ाय नित भवि करत शिवपंकति मचूं।
अरहन्त श्रुतसिद्धांत गुरु-निरग्रन्थ नित पूजा रचूं॥
दोहा - वसुविधि अर्घ संजोयकै, अति उछाह मन कीन।
जासों पूजौं परमपद, देवशास्त्र गुरु तीन॥

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरूभ्योंऽनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥९॥

जयमाला दोहा

देव शास्त्र गुरु रतन शुभ, तीन रतन करतार।
भिन्न भिन्न कहूँ आरती, अल्प सुगुण विस्तार॥

पद्धरी छन्द

चउ कर्मसु त्रैसठ प्रकृति नाशि, जीते अष्टादश दोषराशि।
जे परम सुगुण हैं अनन्त धीर, कहवत के छ्यालीस गुण गंभीर॥१॥

शुभ समवशरण शोभा अपार, शत इन्द्र नमत कर शीस धार।
देवाधिदेव अरहंत देव, वन्दौं मन वच तन करि सु सेव॥२॥

जिनकी ध्वनि हैं ओंकाररुप, निर-अक्षरमय महिमा अनूप।
दश अष्ट महाभाषा समेत, लघुभाषा सात शतक सुचेत॥३॥

सो स्याद्वादमय सप्तभंग, गणधर गूँथे बारह सुअंग।
रवि शशि न हरै सो तम हराय, सो शास्त्र नमों बहु प्रीति ल्याय॥४॥

गुरु आचारज उवझाय साधु, तन नगन रतनत्रय निधि अगाध।
संसारदेह वैराग्य धार, निरवांछि तपैं शिवपद निहार॥५॥

गुण छत्तिस पच्चीस आठबीस, भवतारन तरन जिहाज ईश।
गुरु की महिमा बरनी न जाय, गुरु नाम जपों मन वचन काय॥६॥

सोरठा

कीजै शक्ति प्रमान, शक्ति बिना सरधा धरै।
द्यानत-सरधावान, अजर अमर पद भोगवै॥

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यो महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

श्री जिनके परसाद तैं, सुखी रहें सब जीव।
यातैं तन मन वचन तैं, सेवो भव्य सदीव॥

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलि क्षिपेत्।